औद्योगिक क्रान्ति

असि०प्रो० डॉ० संदीप कुमार
इतिहास विभाग
बी०एम० कॉलेज, रहिका, मधुबनी
मो०-8051796740

औद्योगिक क्रान्ति से अभिप्राय मानव जाति के उन दीर्घकालीन क्रियाकलाप से था जिसमें मनुष्यों ने ही स्वयं ही निर्माण कार्य के परम्परागत तरीके बाहर निकलकर उसे अपनी जागृत मानसिक क्षमता द्वारा तीव्र मशीनीकरण का रूप दिये। हस्त शिल्प तथा कुटीर उद्योग के द्वारा कम उत्पादन के पुराने ~~पारम्परिक~~ चाह को दरकिनार करते हुए अधिशेष उत्पादन के द्वारा अपने समृद्धि के रास्ते को चुनने की महत्वाकांक्षा ने ही औद्योगिकरण, मशीनीकरण, तीव्र औद्योगिकरण के स्वरूप को साकार किया।

→ औद्योगिक क्रान्ति की शुरूआत 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में हुई। इसके पीछे कई वजहें थी। ये हैं:—

* इंग्लैण्ड के निवासियों का जीवन स्तर अन्य किसी भी देश के निवासियों के जीवनस्तर से उच्च था। इंग्लैण्ड में लोगों के पास अधिक क्रय शक्ति होने तथा नगरीय जीवन के विकास से वस्तुओं की मांग बढ़ी। वस्तुओं की बढ़ी हुई माँग की पूर्ति के लिये अधिक उत्पादन की तरफ ध्यान दिया गया। फलस्वरूप जीवन स्तर के विकास का लाभ उद्योगों की व्यापकता को मिला।

* इंग्लैण्ड में लोहे तथा कोयले की खान आस-पास ही मौजूद थे जिससे बड़े-बड़े मशीनों के निर्माण के लिये कच्चे माल आसानी से उपलब्ध हो गये। फलस्वरूप पक्के लोहे से मजबूत, बड़ी-बड़ी मशीनों का निर्माण प्रारम्भ हुआ।

* तत्कालीन विश्व में इंग्लैण्ड का जहाजी बेड़ा सबसे समृद्ध था जिसका लाभ उसे सामुद्रिक व्यापार में मिला। उसके पास संसार के प्रमुख व्यापारिक ~~पर~~ मार्गों पर स्थित अत्युत्तम बंदरगाह थे। जिससे उसके व्यापार को प्रोत्साहन मिला तथा वह दिन-दोगुनी, रात चौगुनी रफ्तार से बढ़ने लगा। व्यापारिक के अधिशेष लाभ ने उसके सामुद्रिक मार्ग पर एकाधिकार को साकार कर दिया। इसका लाभ उद्योग जगत को भी उतना ही मिला।

* इंग्लैण्ड का निर्यात व्यापार अन्य युरोपीय देशों के निर्यात व्यापार की तरह नहीं था जिसमें उच्च-कोटि की वस्तुयें शामिल थी। उच्च कोटि की वस्तुयें व मुख्यतः कम मात्रा में हाथों द्वारा निर्मित होती थी जिनसे केवल समृद्ध लोग ही खरीदते

P.T.O

थे जिससे उत्पादन बेहद सीमित थी। दूसरी तरफ इंग्लैण्ड ने अपने कल-कारखानों में उन वस्तुओं का उत्पादन किया जो दैनिक उपभोग में शामिल थी, आम-अवाम के लिये अति-आवश्यक थी, जिसका उसके उपनिवेशों में उत्पादन नहीं या बेहद कम होता था और वे इंग्लैंड की उत्पाद की कीमत की तुलना में सस्ते भी होते थे। फलस्वरूप आम लोगों में भी खपत की प्रवृत्ति बढ़ी जिससे उनमें वृद्धि करने की मांग किया जाने उन्हें काम भी इन कल-कारखानों में मिलना शुरू हो गया। इस प्रकार उद्योग जगत को काफी लाभ मिला।

* 18वीं सदी के अन्त तक इंग्लैण्ड ने दुनिया में अपना एक विस्तृत औपनिवेशिक साम्राज्य स्थापित कर लिया था जबकि इस दौड़ में यूरोप के अन्य देश काफी पीछे थे जिसका लाभ इंग्लैण्ड को मिला। इंग्लैण्ड ने अपने इन उपनिवेशों से कल-कारखानों के लिये आवश्यक कच्चे माल अधिकाधिक मात्रा में प्राप्त किये। दूसरी तरफ, इन्हीं उपनिवेशों ने इंग्लैण्ड के लिये एक विस्तृत बाजार भी उपलब्ध करा दिया। अब इंग्लैण्ड अपनी तकनीकी प्रगति का फायदा उठाते हुए इन उपनिवेशों से कच्चा माल प्राप्त करने लगा और फिर इन्हीं कच्चा माल से वस्तुओं का उत्पादन करते हुए इन उपनिवेशों के बाजारों में बेचने लगा। इस प्रकार इंग्लैण्ड को अपने उपनिवेशों से दो-तरफा लाभ मिला।

* इंग्लैण्ड में कृषि दासता एवं श्रेणी-श्रम व्यवस्था अन्य युरोपीय देशों की तुलना में काफी पहले समाप्त हो चुका था। अब इंग्लैण्ड के लोग स्वतन्त्र वातावरण में स्वतन्त्र विचार रखते हुए अपने लिये लाभ-हानी को समझ सकते थे। अब इंग्लैण्ड के लोग कोई भी उद्योग लगाने तथा किसी भी उद्योग में कार्य करने के लिये पूरी तरह स्वतन्त्र थे। अब उन्हें पहले की अपने जीवन के क्रिया-कलापों में परिवर्तन के लिये शासक अथवा सामन्त की इच्छा पर निर्भर नहीं रहना पड़ता था। इसका लाभ भी इंग्लैण्ड के उद्योग जगत को मिला।

* फ्रांसीसी क्रान्ति एवं नेपोलियन के युद्धों ने भी इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। युद्ध के दिनों में इंग्लैण्ड ने अपने साथी देशों की सभी आवश्यकताओं को पूरी करने की कोशिश की। सैनिकों के लिये कपड़े, जूते, सहित अनेक सामग्रियों का जोर-शोर से निर्माण कर उन युद्धरत देशों को उपलब्ध कराया। इससे

P.T.O

मशीनों का निर्माण एवं सुधार की प्रक्रिया भी अपनाई गई। क्रमशः युद्ध समाप्ति के बाद जब युद्ध सामग्री की मांग समाप्त हो गई तो इन सामग्रीयों के निर्माण कार्य में लगे लोग बेकार हो गये फिर से उन्हें रोजगार देने के लिये अन्य वस्तुओं के उत्पादन वाले कल-कारखाने का विकास कर इन बेरोजगारों को इसमें लगाया गया। ये बेरोजगार युवक भी कम पारिश्रमिक पर काम देने को तैयार हो गये जिसका लाभ भी उद्योगों को मिला।

* इंग्लैण्ड के पास बड़े-बड़े कारखानों में लगाने के लिये पूँजी थी। वाणिज्यवाद की सफलता के परिणामस्वरूप प्रचुर मात्रा में धन इंग्लैण्ड में जमा हो गया था। इंग्लैण्ड की तात्कालिक परिस्थितियों ने भी पूँजी संग्रह तथा उसके उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिये अनुकूल माहौल तैयार किया। जहाँ एक ओर इंग्लैण्ड के व्यापारियों ने भारत तथा अन्य उपनिवेशों से असमान्य लाभ कमाकर धन एकत्र किया, वहीं 17वीं शताब्दी में प्यूरिटन तथा 18वीं शताब्दी में मेथोडिस्ट आन्दोलनों ने सादा जीवन, कम से कम खर्च और अधिक बचत से व्यवसायों में विनियोग को प्रोत्साहन दिया। भारत की लूट ने इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति के लिये प्रमुख रूप से उत्प्रेरक का कार्य किया।

* इंग्लैण्ड का नव धनाढ्य वर्ग कुलीन नहीं था, अपितु सौदागरों एवं व्यापारियों का था, जो अपनी पूँजी को उद्योगों एवं वैज्ञानिक अनुसंधानों में लगाने के लिये तत्पर था। यह नवोदित वर्ग नई उत्पादन विधियों को अपनाने में संकोच नहीं करता था। यह वर्ग इस बात पर विश्वास नहीं करता था कि किसी कारोबार में लगना उनकी शान के खिलाफ है। वे पूँजी को औद्योगिक विकास व्यापार में लगाकर अधिक पूँजी अधिशेष पूँजी की चाह रखते थे। इससे भी औद्योगिक क्रान्ति को प्रोत्साहन मिला।

* 1688 ई की 'गौरवपूर्ण क्रान्ति' के पश्चात् इंग्लैण्ड में संविधान जिन सुदृढ़ सिद्धान्तों पर आधारित किया गया, उनसे आंतरिक शांति बनी रही। इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री वालपोल की कुशल नीति से राजनैतिक एवं वित्तीय स्थायित्व बढ़ा। जब यूरोप के अन्य देश गृह युद्ध तथा बाह्य आक्रमणों से आतंकित थे तब ब्रिटेन को राजनीतिक स्थिरता एवं शान्ति में व्यापार तथा उद्योगों के विकास का अवसर मिल गया।

P.T.O

* 18वीं सदी के अन्त में इंग्लैण्ड में एक भयंकर महामारी फैली जिसे काली मृत्यु कहा जाता था। इस महामारी से लाखों लोगों की जान चली गई। जिसके कारण इंग्लैण्ड में किसानों और मजदूरों की अत्यधिक कमी हो गई। हजारों किसान गाँव छोड़कर मजदूरी की तलाश में शहरों में आने लगे और अपनी योग्यता एवं रूची के अनुसार विभिन्न काम-धन्धों में लग गये। जिससे शहरों में उद्योगों पर श्रेणी व्यवस्था का नियंत्रण ढ़ीला हो गया। इस परिस्थिति का लाभ नये प्रशिक्षित कारीगरों ने उठाया, उन्होंने अपने स्वतन्त्र उद्योग स्थापित करने शुरू कर दिये।

* इंग्लैण्ड में 18वीं शताब्दी के आरम्भ में बैंको की स्थापना हो चुकी थी। बैंकिंग प्रणाली के विकास से इंग्लैण्ड के उद्योगपतियों को ऋण प्राप्त करने में तथा पूँजी जमा करने की सुविधा मिल गई।

* व्यापारिक दृष्टिकोण से इंग्लैण्ड की भौगोलिक स्थिति विशिष्ट थी। वह एक तरफ शेष संसार से बिल्कुल पृथक था वहीं अपनी तकनीकी क्रान्ति, भौगोलिक खोज एवं औपनिवेशिक साम्राज्य की बदौलत शेष संसार से जुड़ा हुआ भी था। इंग्लैण्ड चारों ओर से समुद्र से घिरा रहने के कारण बाह्य-आक्रमणों से सुरक्षित रहा। इसलिये वह युद्धजनित हानियों से बचा रहा तथा अपना औद्योगिक विकास करता रहा।

* इंग्लैण्ड में कृषि क्रान्ति की शुरूआत औद्योगिक क्रान्ति से पूर्व ही हो चुकी थी। कृषि में हुए परिवर्तनों का परिणाम अधिक उत्पादन के रूप में सामने आया। अब बड़े पैमाने पर कृषि करना सम्भव हुआ। कृषि में मशीनीकरण के उपयोग से छोटे-छोटे किसान बेकार हो गये। वे अब खेत को छोड़कर पेशा की तलाश में शहरों की ओर आने लगे। जिससे शहरी धनाढ्य वर्गों को सस्ता श्रम उपलब्ध हो गया। इस प्रकार यंत्रीकरण, धनाढ्य वर्ग, सस्ता श्रम तथा कृषिजनित समस्या ने औद्योगिक क्रान्ति को जीवन्त कर दिया।